# नदी हूँ मैं

## स्वाध्याय

### पद्यांश 1

**अपनी पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ क्रमांक 43 पर दी गई पंक्तियाँ (1 से 56 तक) पढ़कर निम्नलिखित कृतियाँ कीजिए:**

**|झीलों से निकलती ....................**

**......................हँसती-खिलखिलाती ।|**

आकलन कृतियाँ

कृ.1. आकृति पूर्ण कीजिए:

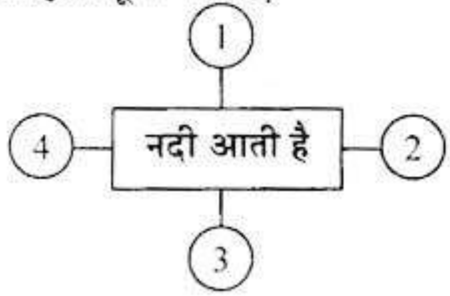


उत्तर: 1. झीलों से निकलती 2. जलप्रपातों से गिरती

3. झरनों से झरती 4. पर्वतों से उछलती

**कृ.2. आकृति पूर्ण कीजिए:**

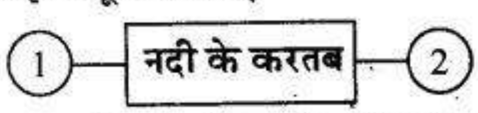


**उत्तर:** 1. नदी बड़े-बड़े पत्थरों को तोड़ती, उछालती है।

2. नदी ऊँचाई से कूदती है।

**कृ.3. आकृति पूर्ण कीजिए:**

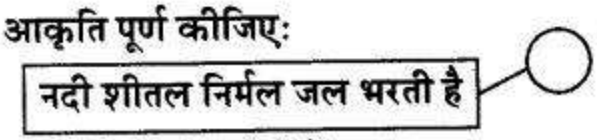


**उत्तर:** घाटियों के गहरे कटोरों में

कृ.4. आकृति पूर्ण कीजिए:

उत्तर: 1. घाटियाँ 2. बीहड़
3. जनहीन जंगल

कृ.5. आकृति पूर्ण कीजिए:

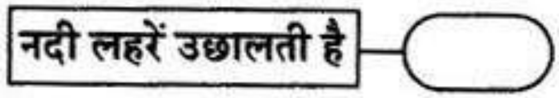


उत्तर: चाँद तक

कृ.6. आकृति पूर्ण कीजिए:

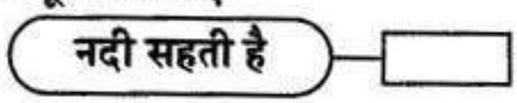


उत्तर: सूर्य के घात

कृ.7. आकृति पूर्ण कीजिए:

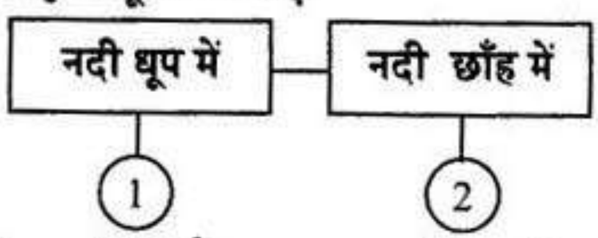


उत्तर: 1. चमकती 2. मुसकाती

**कृ.8. आकृति पूर्ण कीजिए:**

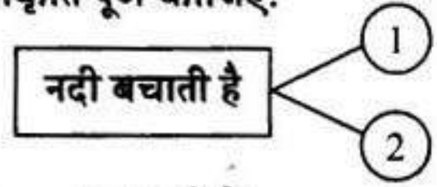


**उत्तर:** 1. तप्त गरमी से 2. क्षीण जलधारा को

**कृ.9. आकृति पूर्ण कीजिए:**

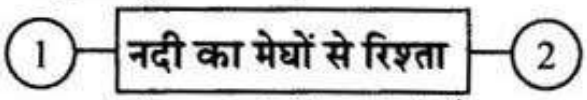


**उत्तर:** 1. नदी बरखा के मेघ बुलाती है।

2. नदी मेघों की बूँदों को एक-एक कर जोड़ती है।

**कृ.10. आकृति पूर्ण कीजिए:**

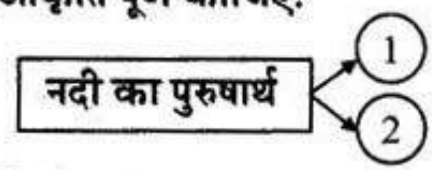


**उत्तर:** 1. नदी अपने ही किनारों के सीमाबंधन तोड़ देती है।

2. नदी बंजर धरती को उपजाऊ बनाती है।

**कृ.11. आकृति पूर्ण कीजिए:**

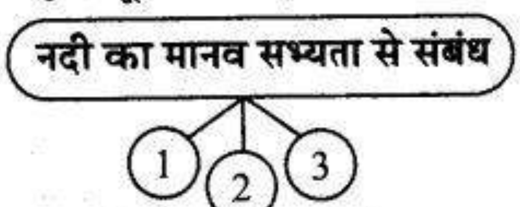


**उत्तर:** 1. नदी नए नगर बसाती है।

2. नदी बस्तियाँ बनाती है।

3. नदी सभ्यता के कारवाँ को आगे बढ़ाती है।

**कृ.12. आकृति पूर्ण कीजिए:**

**उत्तर:** 1. कही 2. अनकही

**कृ.13. आकृति पूर्ण कीजिए:**

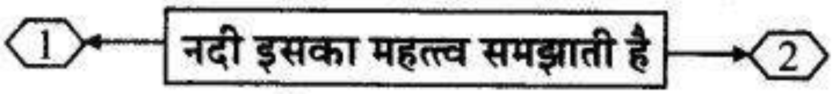


**उत्तर:** 1. सतत चलने

2. अथक श्रम के स्वेदकणों

**कृ.14. आकृति पूर्ण कीजिए:**

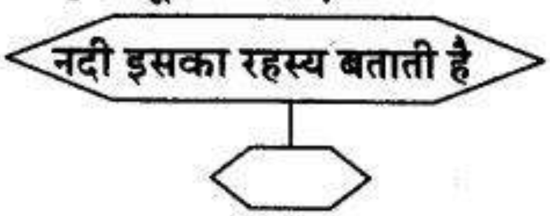


**उत्तर:** सफल जीवन

**कृ.15.आकृति पूर्ण कीजिए:**

**उत्तर:** 1. नदी हूँ मैं!

2. बस एक नदी हूँ।

3. बहती-बहाती, हँसती-खिलखिलाती।

**कृ.16.एक शब्द में उत्तर लिखिए:**

1. पर्वतों से नीचे गिरती बड़ी जलधारा बनाती है
2. ऐसी धरती जिसमें कुछ नहीं उगता
3. गृहस्थी लाद कर चलने वाले वाहनों की बहुत लंबी पंक्ति
4. पसीने की बूंदें

**उत्तर:** 1. जलप्रपात  2. बंजर

3. कारवाँ  4. स्वेदकण

**कृ.17.सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:**

1. उच्च _______ से बनी घाटियों के गहरे कटोरों में।
(अंगूरों, कंगूरों, पत्थरों)

2. घाटियों से निकलती, _______ से लड़ती।
( बीहड़ों, गीदड़ों, चमगादड़ों)

3. धरती के _______ को तृप्ति दिलाती।
(मानवों, कारवाँ, प्राणियों)

4. सफल जीवन का _______ बताती।
(महत्त्व, गुरुत्व, रहस्य)

**उत्तर:** 1. कंगूरों 2. बीहड़ों

3. प्राणियों 4. रहस्य

**कृ.18.निम्नलिखित विधान सत्य हैं या असत्य, लिखिए:**

1. नदी सूर्य तक लहरें उछालती है। ☐
2. नदी उबलती-उछलती है। ☐
3. नदी सदियों से नहीं बहती है। ☐
4. नदी दुनिया को मार्ग दिखाती है। ☐

**उत्तर:** 1. असत्य 2. सत्य

3. असत्य 4. सत्य

**कृ.19. निम्नलिखित शब्द-युग्मों की जोड़ियाँ मिलाइए:**

| | **अ** | | **ब** |
|---|---|---|---|
| 1. | खिलती | अ. | लहराती |
| 2. | इठलाती | ब. | अनकही |
| 3. | छिपती | क. | बहाती |
| 4. | उबलती | ड. | खिलखिलाती |
| 5. | बलखाती | इ. | इतराती |
| 6. | कही | ई. | छिपाती |
| 7. | बहती | उ. | उछलती |

**उत्तर:** (1-ड), (2-इ), (3-ई), (4-उ), (5-अ), (6-ब), (7-क)।

**क्र.20.निम्नलिखित विधानों को पद्यांश में आए उनके क्रमानुसार लिखिए:**

1. नदी बंजर धरती को उर्वर बनाती है।
2. नदी सफल जीवन का रहस्य बताती है।
3. नदी जनहीन जंगलों से गुज़रती है।
4. नदी बरखा के मेघ बुलाती है।

**उत्तर:** 1. नदी जनहीन जंगलों से गुज़रती है।

2. नदी बरखा के मेघ बुलाती है।
3. नदी बंजर धरती को उर्वर बनाती है।
4. नदी सफल जीवन का रहस्य बताती है।

**क्र.21.सही विकल्प चुनकर पंक्ति पूर्ण किजिए:**

1.

**घाटियों के गहरे कटोरों में**

- शीतल निर्मल जल भरती।
- शीतल चंचल जल भरती।
- शीतल मधुर जल भरती।

2.

**सूर्य के घात सहती**

- क्षीण रेखा-सी रह जाती।
- पीत रेखा-सी रह जाती।
- शून्य रेखा-सी रह जाती।

उत्तर: 1. घाटियों के गहरे कटोरों में **शीतल निर्मल जल भरती।**

2. सूर्य के घात सहती, **क्षीण रेखा-सी रह जाती।**

**कृ.22. असंगत शब्द खोजकर लिखिए:**

1. सुप्त / तप्त गरमी से बचाती।
2. धरती के प्राणियों को तृप्ति / मुक्ति दिलाती।

**उत्तर:** 1. सुप्त 2. मुक्ति

**कृ.23. आकृति पूर्ण कीजिए:**

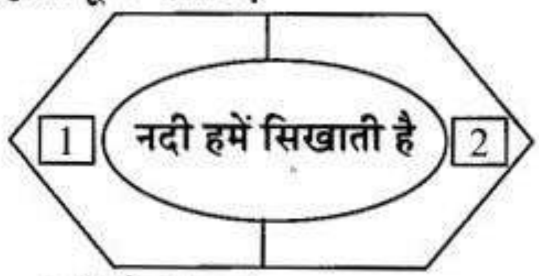


**उत्तर:** 1. गतिशील रहना

2. प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहना

**व्याकरण कृतियाँ**

क्र.1. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द पद्यांश में से खोजकर लिखिए:

| | |
|---|---|
| 1. ऊँचा | 2. चोटी |
| 3. ठंडा | 4. स्वच्छ |
| 5. ऊबड़खाबड़ | 6. वीरान |
| 7. चोट | 8. पतली |
| 9. छाया | 10. गर्म |
| 11. रेत | 12. बारिश |
| 13. बादल | 14. उपजाऊ |
| 15. काफ़िला | 16. संतुष्टि |
| 17. रास्ता | 18. लगातार |
| 19. बिनाथके | 20. मेहनत |

उत्तर:

| | |
|---|---|
| 1. उच्च | 2. शिखर |
| 3. शीतल | 4. निर्मल |
| 5. बीहड़ | 6. जनहीन |
| 7. घात | 8. क्षीण |
| 9. छाँह | 10. तप्त |
| 11. बालू | 12. बरखा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 13. | मेघ | 14. | उर्वर |
| 15. | कारवाँ | 16. | तृप्ति |
| 17. | मार्ग | 18. | सतत |
| 19. | अथक | 20. | श्रम |

**कृ.2. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द पद्यांश में से खोजकर लिखिए:**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | तलहटी | 2. | उष्ण |
| 3. | गंदला | 4. | प्रतिघात |
| 5. | बंजर | 6. | असभ्यता |
| 7. | अतृप्ति | 8. | असफल |

**उत्तर:**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | शिखर | 2. | शीतल |
| 3. | निर्मल | 4. | घात |
| 5. | उर्वर | 6. | सभ्यता |
| 7. | तृप्ति | 8. | सफल |

**कृ.3. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए:**

1. बस्तियाँ  2. नदी

**उत्तर**: 1. बस्ती  2. नदियाँ

**कृ.4. सार्थक शब्द बनाकर लिखिए:**

1.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ल | प्र | त | पा | ज |

2.

| | | | |
|---|---|---|---|
| ज | न | न | ही |

3.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ल | ला | ती | खि | खि |

4.

| | | | |
|---|---|---|---|
| इ | ती | ठ | ला |

5.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मा | बं | न | ध | सी |

6.

| | | | |
|---|---|---|---|
| ही | न | अ | क |

**उत्तर**: 1. जलप्रपात  2. जनहीन
3. खिलखिलाती  4. इठलाती
5. सीमाबंधन  6. अनकही

**कृ.5. निम्नलिखित शब्दों का सार्थक वाक्य में प्रयोग कीजिए:**

1. कंगूरा  2. निर्मल
3. बीहड़  4. बंजर
5. उर्वर  6. सभ्यता
7. तृप्ति  8. रहस्य

**उत्तर**: 1. प्राचीन क़िले के **कंगूरे** आज भी सिर उठाए खड़े हैं।

2. पहाड़ी झरनों का जल बड़ा **निर्मल** होता है।

3. चंबल के **बीहड़ों** में दुर्दांत डाकू रहते हैं।
4. राधे ने अपनी **बंजर** ज़मीन कौड़ियों के दाम बेच डाली।
5. गंगा का मैदान बड़ा ही **उर्वर** है।
6. भारत की **सभ्यता** का दुनिया में कोई सानी नहीं है।
7. दूसरों का धन हड़पने से कभी **तृप्ति** नहीं मिलती।
8. वह अपने सीने में गहरा **रहस्य** छिपाए हुए है।

**क्र.6. उचित जोड़िया मिलाइए:**

घात सहना, सीमबंधन तोड़ना, मार्ग दिखाना, रहस्य बतलाना

सच उगलना, कष्ट उठाना, सच्ची राह दिखाना, कैद से मुक्त होना

**उत्तर:** घात सहना – कष्ट उठाना
सीमाबंधन तोड़ना – कैद से मुक्त होना
मार्ग दिखाना – सच्ची राह दिखाना
रहस्य बतलाना – सच उगलना

**क्र.7. वाक्य शुद्ध करके पुन: लिखिए:**

1. मेघों के बूंदों को एक-एक जोड़ती।
2. बंजर धरती ने ऊर्वर बनाती।

**उत्तर:** 1. मेघों की बूँदों को एक-एक जोड़ती।
2. बंजर धरती को उर्वर बनाती।

**क्र.8. उचित विरामचिह्नों का उचित प्रयोग करके निम्नलिखित वाक्य पुन: लिखिए:**

नदी हूँ मैं बस एक नदी हूँ बहती बहाती हँसती खिलखिलाती

**उत्तर:** नदी हूँ मैं ! बस एक नदी हूँ – बहती-बहाती, हँसती-खिलखिलाती।

**क्र.9. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय अलग करके लिखिए:**

1. ऊँचाई
2. गरमी
3. अनकही
4. तृप्ति
5. अथक
6. नदी

उत्तर:

| | शब्द | उपसर्ग | प्रत्यय |
|---|---|---|---|
| 1. | ऊँचाई | – | ई |
| 2. | गरमी | – | ई |
| 3. | अनकही | अन | – |
| 4. | तृप्ति | – | ई |
| 5. | अथक | अ | – |
| 6. | नदी | – | ई |

**क्र.10.निम्नलिखित शब्दों के सरल अर्थ लिखिए:**

1. पर्वत
2. अनकही
3. प्राणी
4. शदी
5. स्वेद

उत्तर:
1. पहाड़
2. जो कहा न गया हो
3. जीव
4. शताब्दी
5. पसीना

**पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तरी**

**कृ.1. नदी कौन-कौन से काम करती है? हमें उससे क्या प्रेरणा मिलती है?**

**उत्तर:** नदी परोपकारी स्वरूप की है। नदी अपने अमृतरूपी जल से उजाड़ जमीन को भी उपजाऊ बना देती है। नदी के किनारे पर नए नगर बसते हैं। इन नगरों के आस-पास कई छोटी-बड़ी बस्तियाँ भी बसने लगती हैं। नदी अपनी उपजाऊ मिट्टी तथा जल द्वारा लोगों को अन्न, पानी आदि मुहैया कराती है। इन वस्तुओं को पाकर नदी के किनारे रहनेवाले लोगों का जीवन तृप्त होता है। इतिहास साक्षी है कि सभ्यता का सबसे अधिक विकास नदी के किनारों पर ही हुआ है। वह सभ्यता के काफिले को निरंतर आगे बढ़ाती रहती है।

नदी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें सतत गतिशील रहना चाहिए। जीवनमार्ग कितना ही कठिन क्यों न हो हमें घबराना नहीं चाहिए। जिस प्रकार नदी दूसरों की सेवा करती है उसी प्रकार हमें भी सेवा व्रत लेना चाहिए।

**स्वमत अभिव्यक्ति**

**क्र.1. आपकी राय में नदियों का महत्त्व**

**उत्तर:** मानव सभ्यता में नदियों का महत्त्व बहुत बड़ा है। प्राचीन सभ्यताएँ नदियों के किनारे ही जन्मीं और फली-फूलीं। चाहे वह मिस्र की सभ्यता हो, जो नील नदी के किनारे विकसित हुई, चाहे वह मेसोपोटामिया और बेबीलोन की सभ्यता हो, जो दज़ला-फ़रात के किनारे विकसित हुई या फिर भारत की सभ्यता हो, जो सिंधु और गंगा किनारे विकसित हुई। नदियाँ न सिर्फ जीवनदायिनी होती हैं बल्कि वे हमें सदा गतिशील रहने और प्रगति के पथ पर बिना थके, बिना रुके आगे बढ़ते रहने का संदेश देती हैं। नदियाँ हमें परिश्रम, परोपकार, प्रकृतिप्रेम, संघर्ष, साहस और गंभीरता का संस्कार देती हैं। भारत में तो नदियों किनारे कई प्रमुख तीर्थस्थल भी हैं। नदियाँ एक माँ की तरह निस्वार्थ भाव से हमारी सेवा करती हैं, इसलिए मेरी राय में हमें भी एक पुत्र की तरह उनकी सेवा करना चाहिए और उन्हें निर्मल रखना चाहिए।